



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थः सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंध

2024

(12 वाँ संस्करण)



महानिदेशक लेखापरीक्षा (कैन्द्रीय) चेन्नै का
कार्यालय



कार्यालय प्रधानों द्वारा 'सुगंध' पत्रिका के ग्यारहवें अंक का विमोचन



एक ही मंच पर तीनों पत्रिकाओं का विमोचन



हिन्दी दिवस 2023 का आनंद उठाते श्रोतागण



वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में जीएसटीए के उत्कृष्ट निष्पादन हेतु श्री कि. वेणुगोपाल, आई. ए. ए. एस./ निदेशक को रोलिंग शील्ड प्रदान करती प्रधान निदेशक



लेखापरीक्षा भवन परिसर में महिला दिवस का आयोजन

मुख पृष्ठ में

दिनांक 28 अगस्त से 8 सितंबर 2024 तक पेरिस, फ्रांस में आयोजित
ग्रीष्मकालीन पैरालिम्पिक्स में
भारत के खिलाड़ियों को
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै
की तरफ से

हादिक
शुभकामनाएँ



लेखापरीक्षा भवन

सुगंध

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय
वार्षिक गृह पत्रिका

सुगंध परिवार

संरक्षक

श्री आर. तिरुपति वेंकटसामी
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

मार्गदर्शक

श्री एस. गणेशन, निदेशक (प्रशासन एवं सीई)
श्री कि.वेणुगोपाल, निदेशक (डी टी)- I, (जीएसटीए)
सुश्री वी.एस. रेड्डी, उप निदेशक (सीआरए एवं जीएसटीए)

परामर्शदाता

श्री एन. श्रीधर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

सुगंध

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय
वार्षिक गृह पत्रिका



संपादक मंडल

सुश्री वी.एस. रेड्डी, उप निदेशक (सीआरए एवं जीएसटीए)
सुश्री एम.बी. गोमती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री ए. राजू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
डॉ. एस. सुधावल्ली, हिन्दी अधिकारी
श्रीमती अन्नपूर्णा वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक
श्री राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक

संदेश



**रा. तिरुपति वेंकटसामी
महानिदेशक (लेखापरीक्षा)**

यह महती गर्व एवं प्रसन्नता का विषय है कि इस कार्यालय द्वारा 'सुगंध' पत्रिका के बारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास एवं राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति अटल संकल्प एवं सरोकार को दर्शाती है।

'भाषा' किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं परम्परा की परिचायक होती है। भारत एक बहु-भाषी देश है, इसके बावजूद भी इसकी संस्कृति, सभ्यता एवं आत्मा में 'हिंदी' रची-बसी है। कारण है इसका सहज, सरल, सुबोध तथा प्रवाहमय स्वरूप। हमारे कार्यालय में 'सुगंध' पत्रिका ने इस दिशा में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों से सम्बंधित रोचक व ज्ञानवर्धक रचनाएँ समाहित हैं। अतः हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देकर यह कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी प्रगति कर रहा है। मुझे आशा है कि "सुगंध" के इस अंक के माध्यम से पाठकगण कार्यालय के कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को संजोकर उनकी रचनाओं का आनंद लेंगे। पत्रिका से जुड़े सम्पादन मंडल एवं सभी रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

रा.ति.वें.सामी

संदेश



**एस. गणेशन, निदेशक
(प्रशासन एवं सी.ई.)**

कार्यालयीन गृह पत्रिका “सुगंध” के 12 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

भारतीय संस्कृति, भाषाओं का एक संगम है। उनमें से एक हिंदी भाषा है, जिसे संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। भारत देश में हिंदी बोलने, पढ़ने वालों की संख्या भी अधिक है।

सुगंध के इस 12 वें अंक में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में योगदान देने वाले सभी पदधारियों को मैं शुभकामनाएँ देता हूँ।

गणेशन

संदेश



**कि. वेणुगोपाल, निदेशक
(डी.टी.-I)**

कार्यालयीन गृह पत्रिका “सुगंध” के 12 वें अंक के प्रकाशन हेतु सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। हिंदी भाषा का इतिहास समृद्ध है। गृह मंत्री ने भी अपने एक संदेश में बताया कि “राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की एक सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग, प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए।”

मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ।

कि. वेणुगोपाल

संदेश



**वी. सुललिता रेड्डी, उप निदेशक
(सी.एस./जी.एस.टी.-I)**

कार्यालय महानिदेशक (केंद्रीय), लेखापरीक्षा चेन्नै का कार्यालय स्वतंत्र रूप से वर्ष 2012 में अस्तित्व में आया। मैं इस स्वतंत्र कार्यालय की पहली महिला उप निदेशक हूँ। मुझे गर्व है कि मैं इस कार्यालय के गृह पत्रिका “सुगंध” के चयन समिति की भी सदस्य हूँ।

चेन्नै “ग” क्षेत्र में आता है। इसके बावजूद मुझे विभिन्न तरह की रचनाएं प्राप्त हुई।

पिछले दो वर्षों में अपने माता-पिता को खोकर श्मशान वैराग्य पर लिख रही थी, वहीं एक नवजात शिशु के पिता ने पुत्री के आने पर अपनी खुशी व्यक्त की। स्वास्थ्य से लेकर समाज में चल रही रीतियों, कुरीतियों, महान मिसाइल मैन, जंगल वर्णन, अंग्रेजी बोल- हिन्दी अभिव्यक्ति जैसे विविध लेख हिन्दी कक्ष को प्राप्त हुए जो वाकई में प्रशंसा के पात्र हैं।

मैं सभी लेखकों एवं हिन्दी कक्ष को धन्यवाद देते हुए कार्यालय के अन्य सदस्यों से अनुरोध करती हूँ कि वे आगे के संस्करणों एवं हिन्दी पेखवाड़े में बढ़-चढ़ के भाग ले धन्यवाद।

(Handwritten signature)

संदेश



**एन. श्रीधर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशासन)**

कार्यालयीन गृह पत्रिका “सुगंध” के 12 वें अंक के प्रकाशन से मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है।

यह पत्रिका राजभाषा एवं साहित्यिक हिंदी के विकास के प्रति एक संकल्प को दर्शाता है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति बढ़ावा मिलेगा। कार्यालय के सभी पदधारी अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति में सहयोग करते आ रहे हैं एवं भविष्य में भी यही कामना करते हैं।

पत्रिका में योगदान देने वाले सभी पदधारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

एन. श्रीधर

संपादकीय

**डॉ. एस. सुधावल्ली
हिन्दी अधिकारी**



"हिन्दी दिवस" की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ "सुगंध" के बारहवें अंक को प्रेषित करते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

भाषा में एकता स्थापित करने की अदभुत क्षमता होती है। भारत में अनेक भाषाओं के प्रचलन के होते हुए भी, हिन्दी भाषा का एक अलग महत्व है। हिन्दी भाषा सीधी, सरल, सीखने-सिखाने में आसान और साहित्य की दृष्टि से भी समृद्ध है। एक राष्ट्र के स्वरूप एवं गरिमा को प्रतिपादित करने वाली चेतना के रूप में यह भाषा है। समूचे राष्ट्र की भावधारा को व्यक्त करने वाली भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की पहचान की गई है।

इस प्रकार की गृह-पत्रिकाएँ कार्यालय में सकारात्मक माहौल पैदा करती हैं एवं कार्यालय में कार्यरत पदधारियों की साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने में भी सहायक हैं।

भारत एक बहु-भाषी राष्ट्र है, जहाँ समृद्ध संस्कृति की विशाल परम्परा है, जिसका आभास इस पत्रिका में समाविष्ट विभिन्न विधाओं से होता है। गैर हिन्दी राज्यों में हिन्दी को बढ़ावा देने के विशेष प्रयास से प्रति वर्ष यह पत्रिका निकाली जाती है।

आशा है कि पिछले संस्करणों की तरह, इस बार भी "सुगंध" पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा, नैतिक, बोध, सृजनात्मकता एवं स्वस्थ साहित्य से ओत-प्रोत रहेगी।

अनुक्रमणिका(श्री/सुश्री/श्रीमती)

जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है	बिरेन्द्र कुमार यादव / वरिष्ठ लेखापरीक्षक
ज़मीन और आसमान	मोहम्मद आसिफ / लेखापरीक्षक
आसान है क्या?	विजयेता साव गुप्ता / कनिष्ठ अनुवादक
बदलते मौसम का स्तवन	बी.ऐश्वर्या (पुत्री), सी.वी.बाबू/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मीलों पार एक वादा A Promise Across the Miles	अन्जानव कृपार नोंगखलाव/ सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
बच्चों की नादानियाँ	सव्यसाची भगत / वरिष्ठ लेखापरीक्षक
शारीरिक फिटनेस	मौमिता मिद्दे / सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
परोपकार	बी. भुवनेश्वरी / वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुगंध	वंगला सुललिता रेड्डी / उपनिदेशक
फेक भक्त	विजयेता साव गुप्ता / कनिष्ठ अनुवादक
कैगल फॉल्स: एक छिपा हुआ रत्न	संजोय घोष / वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द मिसाइल मैन	दीपा सिंह / सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
जो है-ठीक है	डॉ० एस. सुधावल्ली / हिन्दी अधिकारी
अनिवार्य है ब्रेक फास्ट, जानें क्यों?	जे. पुष्कला / वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
2024 गणतंत्र दिवस समारोह	आर. गुरुप्रसाद (पुत्र), आर. रविशंकर/ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मेरी बेटी	राहुल साव / कनिष्ठ अनुवादक
अमेजन की अनोखी दुनिया	अन्नपूर्णा वर्मा / वरिष्ठ अनुवादक
स्वतः स्पष्ट	डॉ० एस. सुधावल्ली / हिन्दी अधिकारी
राजभाषा गतिविधियाँ	कल्याण गतिविधियाँ
इस कार्यालय के खेल सितारे	नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरण समारोह
हिन्दी कार्यशाला	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक पदोन्नत पदधारियों की सूची

बिरेन्द्र कुमार यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है

सदैव प्रसन्न रहिए, जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है,
जिनका मन मस्त है, उसके पास समस्त है।
जिनके पास धन अधिक है, वही तनाव-ग्रस्त है,
धन के पीछे भागने वालों का जीवन समाप्त है।

जो न अस्त है, न व्यस्त है, उसका ही जीवन मस्त है,
ईश्वर नैया पार कराएंगे, जिनका बेड़ा गर्त है।
जो न भूत में है, न भविष्य में, वर्तमान वाला मस्त है,
न जीत में, न हार में, इकरार वाला मस्त है।

न गम में, न खुशी में, ससमय वाला मस्त है,
भाग्य और किस्मत के पीछे भागने वाला ही परास्त है।
मेहनत और लगन से ही बदलती ज़िंदगी की बिसात है,
जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है, बस यही सही बात है।

जो भाग्य में है, वो दौड़कर आवत है,
जो नहीं है, वो ज़िंदगी से चला जावत है।
संतोष है तो ज़िंदगी मस्त है,
सदैव प्रसन्न रहिए, जो प्राप्त है, वो पर्याप्त है।



जमीन और आसमान

[यह कविता माता-पिता और उनके बच्चों के बीच पीढ़ीगत अंतर पर प्रकाश डालती है। यह एक वृद्ध पिता (आसमां) के बारे में है जो अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए घर से दूर रह कर कड़ी मेहनत करता है और उसके युवा बच्चे (जमीन) के बारे में है जो अपने पिता से उम्मीद करता है कि उसके पिता उसके साथ रहें और उसकी भावनाओं और समस्याओं को समझ सकें।]

एक बार इक आसमां ने इक जमीं को ज़िंदगी दी,
उस आसमां ने ज़मीं की हर एक ख्वाहिशें पूरी की।
आने वाली कई मुसीबतों से बेइंतहा हिफाज़त की ॥

जमीं खुश थी कि इतनी, खूबसूरत ज़िंदगी दी,
उजड़ी हुई ज़मीं को भी, हर बार बारिश से ताज़गी दी।
खुद कुर्बानियाँ इतनी दी, पर ज़मीं को कोई कमी न होने दी ॥
पर हरगिज़ पसंद न है ज़मीं को, कि आसमां ने क्यूँ इतनी दूरी की?

ज़मीं की दिक्कतें क्या हैं, समझने की कोशिश तो की होती,
मिट गए होते दिलों के फासले, गर ये दूरी कम तो की होती,
ज़रूरत ही क्या थी इतनी दूरी की, पानी तो ज़मीं पर भी था।
सिर्फ पानी की ही कमी नहीं होती।

क्यों बारिश भी जरूरी थी?
अगर ना होती ये बारिश तो,
तो क्या ज़मी में ज़िंदगी नहीं होती?
ऐ आसमां.. गर आए होते पास तुम,
तो जानते.. कि हमेशा ज़मीं को
सिर्फ पानी की ही कमी नहीं होती।

कभी ज़्यादा पानी से बाढ़ होती है,
कभी ज़लज़ले तो कभी तूफान आते हैं।
कम्बख्त ज़मीं तो नादाँ निकली,
भूल गई की आसमां तो साकिन है।
मुसीबतें तो ज़मीं की किस्मत है,
कयामत भी इसी पे लाज़िम है।
ऐ ज़मीं.. तू आसमां से,
कुछ जवाब तलब मत कर,
वो आसमां है, उसका हर काम रहमत है।
वो तेरा साया है वही तेरी किस्मत है॥

अपनी भाषा, अपने विचार
और अपने आप पर विश्वास करें।
सत्य पर चलने वाले
परेशान हो सकते हैं, पराजित नहीं ।

विजयेता साव गुप्ता
कनिष्ठ अनुवादक



आसान है क्या?

आसान है क्या घर से दूर रहना,
आसान है क्या चुप-चाप अकेले सब-कुछ सहना,
हर वक्त एक कमी सताती रहती है,
आखिर क्या होगा मेरे जीवन का यही बात ज़हन में आती रहती है।

मन करता है कि भाग जाऊँ यहाँ से,
और छिप जाऊँ माँ के आँचल में,
हठ करूँ और बोल दूँ कि मत जाने दो इस बार,
माँ अपने कलेजे पर पत्थर रखकर मत भेजो,
बस रोक लो एक बार।

जब भी घर जाती हूँ एक कमी महसूस होती है,
क्या कभी वो पुराने पल हासिल हो पाएँगे,
क्या कभी वो पुराने दिन वापस आएँगे,
एक कचोट-सी उमड़ती है मन में और दिल भर जाता है,
और कितने दिन दूर रहूँ अपने घर से ये सवाल सताता है।

अपने ही घर में मेहमान के तरह जाती हूँ,
एक-एक समान अपने बैग में गुछाती हूँ,
याद से रख लेना अपना सारा सामान
जब ये बात किसी घरवाले के मुँह से सुनती हूँ,
दिल में आह भर जाती है और मन परेशान हो जाता है,
इतने वर्षों की यादों को कोई किस अटैची में भर सकता है,
घर तो सुकून है उसके बिना कोई कैसे रह सकता है।

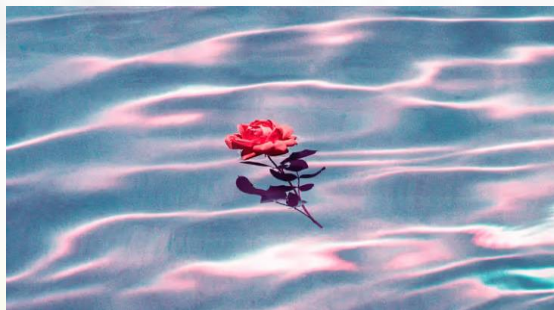
एक बार फिर दिल पर पत्थर रखकर निकल रही हूँ,
न जाने को फिर एक बार दिल कर रहा है,
पर आँखों में नमी लेकर होठों में मुस्कान लेकर
जिंदगी के सफर में आगे बढ़ रही हूँ।

अंदर से चाहती हूँ कि कोई रोक ले,
पर जाना मेरे जीवन का यथार्थ है,
जिम्मेदारियों के दलदल में फँसी हूँ,
मुस्कुराते हुए हर गम को उठाना मेरा यथार्थ है।

फिर से एक बार सबसे दूर हो गयी,
चहार दीवारों और अजनबी लोगों की दुनिया में खो गयी,
सोचने लगी फिर पुराने दिनों के बारे में,
फिर वही ख्याल सताने लगा, फिर वही सब याद आने लगा।

आसान है क्या घर से दूर रहना,
आसान है क्या चुप-चाप अकेले सब-कुछ सहना,
हर वक्त एक कमी सताती रहती है,
आखिर क्या होगा मेरे जीवन का यही बात जहन में आती रहती है।

*(यह कविता उन सभी लोगों को समर्पित है, जो जिम्मेदारियों के वजह से
अपने घर-परिवार से दूर हैं। उनकी भावनाओं को समझने का यह छोटा-सा
प्रयास है।)*



बी.ऐश्वर्या
(पुत्री), सी.वी.बाबू,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



बदलते मौसम का स्तवन

ओह, ऋतुएँ पृथ्वी को कैसे रंग देती हैं,
जीवन और शांत आनंद के स्पर्शों से।
वसंत की गोद में, नए सपने खिलते हैं,
एक पुनर्जन्मित विश्व, एक नाचती हुई भंवर।

ग्रीष्म के साथ सूर्य का आलिंगन,
रोशनी के लंबे दिन और अनंत संपादन।
सुनहरे खेत और नीला आसमान,
प्यारे पल, दोहरापन।

नाज़ुक उसांस से शरद का पुकार,
शीत आसमान में प्रज्वलित पर्ण।
चाँद की रोशनी और गोधूलि की पुकार,
प्रकृति की विदाई, सुनहरी अवरोह।

शिशिर दुनिया को सफेद चादर ओढ़ाती,
खामोश रातें और शीत रोशनी।
शांति में है निहित सुंदरता,
ठंडे आसमान के नीचे एक निस्तब्ध स्थिरता।

हर मौसम बदलता है, एक कालनिरपेक्ष नृत्य,
परिवर्तन का एक चक्र, एक अस्थायी साध्य।
प्रदर्शन देखने प्रकृति का भव्य,
हर रंग और हर रंगत में।

वसंत की पहली लाली से लेकर सर्दियों की ठंड तक,
दुनिया घूम जाती है, और हम स्थिर रहते हैं।
प्रकृति के अनंत प्रवाह से विस्मित,
हर मौसम के उतार-चढ़ाव में।

अन्जानव कूपार नोंगखलाव,
सहायक लेखी परीक्षा अधिकारी



A Promise Across the Miles

Though miles may stretch between us, and skies may part our view,
My heart remains beside you, as constant as the moon.
In the quiet of your slumber and the light of morning's cheer,
I hold you close, my baby, though I am not nearby.

From your first sweet little giggles to each tiny, precious sigh,
I treasure every moment, though they pass me by.
Your smile, a fleeting sunrise, brightens my every day,
And in my dreams, I hold you close, as I count the time away.

Across the vast horizon, where our worlds seem far apart,
I send you all my love, wrapped tightly in my heart.
Though I am far away now, know this truth is clear:
I will return home soon and bring you ever near.

In every giggle and cuddle, in every tiny hand,
I'm with you in your laughter, in your world so grand.
Distance cannot sever the love that's deeply spun,
For soon I'll be beside you, my journey nearly done.

So, as you grow and discover, and your world begins to bloom,
Remember that I'm coming and will be back home soon.
Our bond remains unbroken, a promise warm and true,
Across the miles, my baby, I'll soon be back with you.

(इसका सारांश अगले पृष्ठ पर है)

अन्जानव कूपार नोंगखलाव,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

"मीलों पार एक वादा"

"मीलों पार एक वादा" कविता अपने बच्चे से अलग हुए माता-पिता की गहरी भावनाओं को दर्शाती है। यह माता-पिता और बच्चे के बीच स्थायी संबंध की एक ज्वलंत तस्वीर पेश करती है, भले ही दूरी उन्हें अलग रखती हो।

कविता में माता-पिता के अपने बच्चे के प्रति गहरे प्यार और लालसा को दर्शाया गया है, भले ही वे शारीरिक रूप से अलग क्यों न हों। यह दर्शाता है कि माता-पिता बच्चे के जीवन के हर पल और मील के पत्थर को कैसे संजोते हैं, चाहे उनकी हंसी हो या मुस्कराहट हो या उनकी कोमल आहें। भले ही माता-पिता इन पलों को प्रत्यक्ष रूप से न देख पाएं, लेकिन वे उन्हें बहुत संजोकर रखते हैं और बच्चे को आश्वस्त करते हैं कि उनका रिश्ता अटूट है।

अलगाव के बावजूद, माता-पिता का प्यार और प्रतिबद्धता अटल रहती है। वे अपने स्नेह को मीलों दूर से, अपने दिल में कसकर बांधकर भेजते हैं, और अपने बच्चे को अपनी आसन्न वापसी का आश्वासन देते हैं। कविता आशा और प्रत्याशा को व्यक्त करती है, यह सुझाव देते हुए कि यह अलगाव केवल अस्थायी है, और पुनर्मिलन क्षितिज पर है।

यह दावा कि "दूरियां गहराई से जुड़े प्यार को नहीं तोड़ सकतीं" इस विचार को पुष्ट करता है कि शारीरिक अलगाव के बावजूद माता-पिता-बच्चे का रिश्ता अटूट है। कविता लालसा की भावनात्मक यात्रा को खूबसूरती से दर्शाती है, प्यार के लचीलेपन, उम्मीद की ताकत और पुनर्मिलन के वादे को उजागर करती है।

कुल मिलाकर, कविता उन माता-पिता के साथ गहराई से मेल खाती है जिन्होंने समान अलगाव का अनुभव किया है, उन्हें माता-पिता-बच्चे के बंधन की ताकत और स्थायी प्यार की याद दिलाती है जो किसी भी दूरी को पाट सकता है। यह एक कोमल अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि कोई भी शारीरिक अलगाव पारिवारिक बंधनों की ताकत को कम नहीं कर सकता है।



बच्चों की नादानियाँ

छोटे बच्चे बहुत शरारती होते हैं। बच्चों की शरारत कभी खुशनुमा याद बन जाती है तौ कभी नुकसान की वजह। कभी छोटे बच्चों की शरारत को सुनकर या देखकर आपके चेहरे पर मुस्कराहुट तैर जाती है तो कभी शर्मिंदगी की वजह बन जाती है। मेरी बहन की मझली बेटी राधिका ने आटे के बर्तन में नमक का डब्बा खोलकर उड़ेल दिया। शाम को खाने में बनी रोटी सबको नमकीन लग रही थी और कारण किसी को भी पता नहीं था।

बाद में पूछने पर राधिका ने बताया कि यह उसी की करतूत है। जब उससे पूछा गया कि आपने ऐसा क्यों किया तो जवाब मिला कि उसका मन कर रहा था। आप बताइए कि ऐसे में बच्चों को क्या कहा जाए।

ऐसे ही अभी कुछ दिनों पहले की बात है, मेरे छोटे भाई की बेटी शिविका ने पहले अपनी माँ का मोबाइल पानी भरे बाल्टी में डुबो दिया और फिर खेलते हुए बाल्टी से भरे पानी को फर्श पर गिरा दिया।

शिविका की माँ जब झाड़ु लगाते हुए स्नान-घर के सामने से निकली तो पानी होने की वजह से धड़ाम से गिर गई। उसके बाद, फर्श को साफ करने के चक्कर में रसोई-घर में उबल रहे दूध को भूल गई, परिणामस्वरूप दूध उबल कर गिर गया और बहुत कम दूध पतीले में रह गया और मजे की बात यह है कि शिविका ने अभी-अभी अपना दूसरा जन्मदिन मनाया है। अब, आप इतनी छोटी बच्ची से क्या कहेंगे और क्या समझाएंगे।

बचपन यँ ही खबसूरत नहीं होता। ऐसी अनगिनत घटनाएँ आपने भी देखी या सुनी होंगी, उनको याद कीजिए और मुस्कराइए।

मौमिता मिददे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



शारीरिक फिटनेस

हम सभी जानते हैं कि स्वास्थ्य ही संपत्ति है। 'स्वास्थ्य' शब्द का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है "शरीर का सुचारु रूप से कार्य करना"। एक व्यक्ति स्वस्थ तभी रह सकता है जब वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से अच्छा कार्य करता हो। नियमित व्यायाम करना हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम करने से हमारी मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं, हमारे शरीर की हड्डियाँ मजबूत रहती हैं, जिससे जोड़ों में दर्द नहीं होता एवं इनमें चोट लगने से टूटने की संभावना भी कम हो जाती है।

व्यायाम करने से पूरे शरीर में ऑक्सीजन का संचालन होता है, जो रक्त प्रवाह में सहायता करता है एवं हृदय एवं फेफड़े की कार्यशक्ति में वृद्धि करता है। व्यायाम करने से हमारा मोटापा कम होता है एवं कोलेस्ट्रॉल भी नियंत्रण में रहता है। व्यायाम हमारे रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है, जिससे हमारा शरीर बीमारियों से सुरक्षित रहता है। स्वयं को शारीरिक रूप से फिट रखने से जटिल बीमारियों से बचा जा सकता है एवं महंगी चिकित्सा का खर्च कम हो जाता है जिससे पैसों की भी बचत होती है।

प्राचीन काल से ही, ध्यान एवं योग हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। इनसे हम न केवल शारीरिक रूप से फिट रहते हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत बनते हैं। ध्यान से हमारी एकाग्रता में वृद्धि होती है। यह हमारे दिमाग को शांत रखने में सहायता करता है एवं योग हमारे रक्तचाप को नियंत्रित रखता है। योग करने से प्रकृति के साथ एक मजबूत रिश्ता स्थापित हो जाता है। ध्यान को अवसाद से लड़ने का सबसे अच्छा साधन माना गया है।

व्यायाम व्यक्ति, समाज, संप्रदाय एवं राष्ट्र को समृद्ध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि किसी देश के नागरिक स्वस्थ हैं तो वह देश सभी क्षेत्रों में अपनी सफलता के झंडे गाड़ सकता है। किसी भी कार्य को करने के लिए पहला कदम सबसे जरूरी होता है, अतः हम आलस पर काबू पाकर व्यायाम करना शुरू कर दें तो स्वस्थ जीवन की एक नई शुरुआत होगी।

**बी. भुवनेश्वरी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**



परोपकार

परोपकार का अर्थ है, दूसरों का भला करना, अर्थात् दूसरों का उपकार करना। परोपकार करने वालों का समाज में हमेशा सम्मान और आदर होता है। जिस समाज में रहकर हम बड़े होते हैं, हमें उस समाज के हित के लिए कुछ अवश्य करना चाहिए।

परोपकार से व्यक्ति की आत्मा का विस्तार होता है और वह दूसरों की सहानुभूति का पात्र बन जाता है। फिर, मानव को जीवन में सुख और शांति पाना सुलभ हो जाता है, इससे उसे मानसिक आनंद मिलता है।

पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश- ये पंचभूत एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इन पर रहने वाले सभी जीव-जंतु एक-दूसरे पर आश्रित हैं। केवल जीव ही नहीं, जड़-प्रकृति भी एक-दूसरे की परस्पर सहायता करती हैं।

भगवान की सृष्टि में जड़ हो या चेतन कोई स्वतंत्र नहीं रहते बल्कि एक-दूसरे की सहायता करते हैं। अर्थात् पेड़ अपने फलों को स्वयं नहीं खाता, दूसरों को खिलाता है। उसी प्रकार, नदी पानी को अपने लिए संग्रह नहीं करती, इससे दूसरों को जीवन देती है। साधु-संत भी परोपकार के मार्ग पर ही चलते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परोपकार जीवों का स्वाभाविक गुण होता है।

वर्तमान युग भौतिक एवं बौद्धिक उन्नति का है। समाज में ऐसे कई लोग हैं जो परोपकार की आड़ में अपनी स्वार्थ-सिद्धि करते हैं। यह परोपकार नहीं कहलाएगा। एक गरीब छात्र की पढ़ाई में उसकी सहायता करना परोपकार है। अनाथालय, धर्मशाला, कुँआ, तालाब आदि बनवाना भी परोपकार कहलाता है। लेकिन परोपकार करने के बाद उसका प्रत्युपकार चाहना नीचता है। परोपकार की भावना से ही समाज की रक्षा हो सकती है। समाज कल्याण के अनेक कार्य परोपकार की भावना से ही प्रेरित होते हैं।

वंगला सुललिता रेड्डी,
उप निदेशक

सुगंध



मुझे आज भी अपने पिताजी के यादों की सुगंध प्रफुल्लित करती है। मेरे पिताजी का निधन 1 मई 2023 को हुआ। उन्हें 4 अप्रैल 2023 को हैदराबाद के नल्लगंडूला सिटीजन अस्पताल में भर्ती कराया गया। हम दोनों बेटियाँ, सरकारी सेवा में कार्यरत हैं। हमें ईश्वर की कृपा से कार्यालय से अवकाश मिल गया और अंतिम समय हम उनके सार्थ व्यतीत कर सके। उनके जाने के पश्चात् मैं एकदम निराश हो गई। ऐसा लगा अब इस जीवन का कोई अर्थ नहीं है। जब एक दिन सब कुछ खत्म ही हो जाना है, तो इस जीवन का क्या अर्थ है?

जब पिताजी की मृत्यु की खबर सभी रिश्तेदारों और दोस्तों तक पहुँची, तो सभी लोग सांत्वना देने के लिए मेरी माँ और हम दोनों बहनों से मिलने आए।

अब, मेरी माँ और हम दोनों बहनों के लिए तो आज तक मेरे पिताजी सुपर-हीरो थे जैसा कि हरेक के साथ होता है। परंतु जो प्यार उन्होंने औरों के दिलों में छोड़ा वो देखने लायक था। उनके एक मित्र वासी रेड्डी जी को जब मेरे पिताजी के निधन के बारे में पता चला, तो वे अपनी विदेश यात्रा की तैयारियों के बीच समय निकालकर मेरे पिताजी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए।

इतना ही नहीं, मेरे पिताजी सेवानिवृत्ति के पश्चात् जहाँ कंसल्टेंट के तौर पर कार्यरत थे, वहाँ भी इस जेनरेशन के सभी केमिस्ट दौड़े-दौड़े उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देने पहुँचे, बिना ये सोचे कि हममें से तो कोई उन्हें जानता ही नहीं।

पिताजी के निधन की खबर से मदीनागुडा के मधु रेज़िडेंसी का हर एक सदस्य उदास था। सभी को ऐसा लग रहा था कि वे अनाथ हो गए हैं। मेरे पिताजी ने हैदराबाद में कई बच्चों की परवरिश और पढ़ाई अपनी सीमित आय के बावजूद की ताकि उन्हें एक सुनहरा भविष्य मिल सके। जब यह बात सभी रिश्तेदारों को पता चली तो सभी ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

मेरे पिताजी द्वारा निस्वार्थ मन से किए गए कार्यों की सूची कभी समाप्त नहीं होगी। आज जब मैंने सुगंध पत्रिका में लिखने का निर्णय लिया तब मुझे पिताजी की याद आई कि उनके द्वारा किए गए भलाई के कार्यों को पत्रिका के माध्यम से सुगंध परिवार के सदस्यों के साथ साझा करूं।

भले ही, जीवन का अंत निश्चित है, यह सत्य है परंतु 80 वर्ष के जीवन में उन्होंने अपने आसपास जो यादों की सुगंध फैलाई है, वो अनंत है।

इसलिए किसी के निधन पर शमशान वैराग्य से निराश होने के बजाय हमें यह सोचना चाहिए कि उनके जीवन को हम फूल के सुगंध की तरह चारों दिशाओं में फैलाएँ ताकि उसकी सुगंध मृत्यु के बाद भी अनंत रहे।



विजयेता साव गुप्ता कनिष्ठ अनुवादक

फेक भक्त



भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'भजना' या 'सेवा करना' होता है, अर्थात् प्रेम एवं श्रद्धा के साथ अपने अराध्य के प्रति पूजा या समर्पण भाव भक्ति कहलाता है। आदिकाल से ही भारतीय संस्कृति में भक्ति को अत्यधिक महत्ता दी गयी है। वेद, उपन्यास, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों आदि के माध्यम से लोगों को ईश्वर की भक्ति एवं मोक्ष का मार्ग बताया गया है। भारत में असंख्य धार्मिक स्थल हैं जहाँ लोग अपने मन की शांति के लिए जाते हैं।

हमारी संस्कृति में सुबह होते ही ईश्वर को याद करके दिन की शुरुआत की जाती है एवं उनको याद करके ही दिन की समाप्ति भी होती है। लोग विभिन्न तरह के व्रत-त्योहार मनाते हैं एवं सर्व कल्याण की कामना करते हैं। परन्तु आधुनिक काल के इस परिवर्तनशील दौर में कुछ लोगों ने भक्ति के तात्पर्य को ही बदल दिया है। कुछ लोगों के लिए भक्ति केवल एकमात्र दिखावा बनकर रह गयी है। धार्मिक स्थलों में अब दर्शन करने से ज्यादा फोटो खिंचवाने एवं सोशल मीडिया पर पोस्ट करने की होड़ लग गयी है।

सोशल मीडिया पर आजकल ब्लॉगर्स बहुत ज्यादा प्रसिद्ध हो रहे हैं, जिनका काम अपने दर्शकों का मनोरंजन करना है। वो उनके लिए हंसी-मजाक, नाच-गान, खाना बनाना-खाना, कपड़ों के फैशन एवं देश-विदेश भ्रमण आदि जैसे अनेक वीडियो अपलोड करते हैं। ये सब तो ठीक था पर अब इन ब्लॉगर्स ने धार्मिक स्थानों को अपना लक्ष्य बना लिया है। जहाँ देखो ये अपना कैमरा लेकर पहुँच जा रहे हैं, एवं अनावश्यक भीड़ बढ़ा रहे हैं।

मंदिरों के अंदर जाकर फिल्मी गानों पर नाचना, भगवान की भाँति सज-सँवर कर अमर्यादित कार्य करना, मांस-मदिरा का सेवन कर मंदिर प्रांगण में प्रवेश करना, अपने वीडियो बनाने के चक्कर में लोगों को परेशान करना, ये सब इनकी प्रवृत्ति बन गयी है।

अभी हाल ही में केदारनाथ में भयानक भीड़ उमड़ जाने के कारण दर्शन को रोक दिया गया था। भीड़ में आधे से ज्यादा लोग केवल ब्लॉग बनाने ही गए थे। इसी प्रकार, बनारस का भी यही हाल हो गया है। गंगा आरती के दौरान श्रद्धालुओं से ज्यादा हाथ में फोन पकड़े लोग गंगा-घाट पर दिखाई देंगे।

प्रशासन एवं सामान्य मनुष्य को इससे बड़ी-ही परेशानी हो रही है। जो लोग सच में ईश्वर के दर्शन करने गए हैं, उनको दर्शन मिलना मुश्किल हो रहा है, घंटों लाइन लगाना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा दिक्कत बुजुर्गों एवं बच्चों को हो रही है। प्रशासन परेशान होकर मंदिरों में फोन ले जाना बंद करवा रही है। जिन मंदिरों में फोन ले जाने की अनुमति नहीं है, वहाँ लोग आराम से दर्शन कर रहे हैं।

ब्लॉगर्स का कार्य अपने दर्शकों को किसी भी जगह के बारे में जानकारी देना है, जरूरी नहीं है कि हर चीज वीडियो के माध्यम से ही दिखाया जाए। हम कहीं भी घूमने जाते हैं तो कुछ यादगार पल अपने साथ रखना चाहते हैं, उसके लिए फोटो खींचना, वीडियो बनाना एक अच्छा साधन है परन्तु हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इस वजह से किसी और व्यक्ति को कोई तकलीफ न हो।

भक्ति एक आस्था का विषय है और अपने स्वार्थ के लिए किसी की भावना को ठेस पहुँचाना गलत है। किसी भी जगह पर मंदिर, धार्मिक स्थल बनाए ही इसलिए जाते हैं कि वहाँ का प्रत्येक मनुष्य कुछ समय भगवान के सानिध्य में व्यतीत कर सके एवं अपने व्यस्त जीवन-शैली में कुछ पल सुकून के जी सके।

प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह दूसरों के हित के बारे में सोचे और दूसरों को कष्ट न दे। सच्ची भावना के साथ ईश्वर की भक्ति करे एवं फेक भक्त की जगह भगवान के सच्चे भक्त बने।



सच्चे भक्त कभी
अपनी भक्ति का
दिखावा नहीं करते।

संजोय घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



कैगल फॉल्स: एक छिपा हुआ रत्न

मैं अपने पूरे परिवार के साथ हॉर्सले हिल्स गया था जिसके भ्रमण की कथा मैं पहले ही पत्रिका में बता चुका हूँ (mentioned in Sugandh 10th edition)। वहाँ से वापस आने के समय हमलोगों ने सोचा कि क्यों न चेन्नै जाने के रास्ते में जो कैगल जलप्रपात (फॉल्स) पड़ता है, उसे देख लें।

मैं इसके बारे में पहले सुन चुका था, सो परिवार की भी सहमति मिल गयी। हॉर्सले हिल्स से कैगल जलप्रपात की दूरी लगभग 90 किलोमीटर थी। हॉर्सले हिल्स से उतरने के समय हमलोगों ने सुबह का नाश्ता कर लिया था। रास्ता बहुत-ही सुंदर था। हम अपनी गाड़ी से ही चल रहे थे। साथ में मेरा एक दोस्त भी था जो अपने परिवार के साथ अलग गाड़ी में बैठा था। हम करीब दस से ग्यारह बजे तक कैगल जलप्रपात पहुँच गये और गाड़ी को रास्ते के किनारे खड़ा कर सभी अंदर गये।

कैगल जलप्रपात आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित है, जो चेन्नै से लगभग 210 किलोमीटर दूर है। इस झरने का नाम पास स्थित कैगल गाँव से लिया गया है। इसे 'दुमुकुरालु जलप्रपात' भी कहते हैं। दुमुकुरालु का अर्थ है पत्थरों से गिरने की आवाज वाला झरना। यह 40 फीट की ऊँचाई से चट्टानों के तल पर गिरते समय बहुत तेज आवाज करता है।

हमलोगों ने अपना जूता पहना और साथ में कुछ खाने का सामान और पानी की बोतल ले लिया क्योंकि झरने के आस-पास कोई आवास या खाने-पीने की दुकान नहीं है। यह बिल्कुल एक एकांत स्थान है। इसमें कोई प्रवेश टिकट भी नहीं लगता है। हम जंगल के अंदर बने हुए रास्ते पर चल पड़े। जंगल में हमें बहुत से हिरण और बंदर दिखे। लोग कहते हैं कि यहाँ तेंदुए और हाथी भी दिखाई देते हैं। झरने तक पहुँचने के लिए कीचड़ भरे रास्ते पर चलना पड़ा।

करीब तीन किलोमीटर चलने के बाद झरने की आवाज सुनाई दी। अब नीचे उतरना था। बहुत सावधानी से उतरना पड़ रहा था। करीब 1 किलोमीटर नीचे जाने के बाद झरना दिखाई दिया। बहुत-ही सुंदर दृश्य था। झरने के आधार के बीचों-बीच शिवलिंग था। सुना है कि यहाँ बड़े धूमधाम से शिवरात्रि उत्सव मनाया जाता है। चारों तरफ प्राकृतिक वन्य जीवन और इन सबके बीच ये मनमोहक जलप्रपात बहुत ही आकर्षक लग रहा था।



कैगल फॉल्स:
एक छिपा हुआ
रत्न



दीपा सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



द मिसाइल मैन

'वैज्ञानिक' आधुनिक राष्ट्र का निर्माता होता है। वह विश्व पटल पर अपने देश को ऊँचाइयों पर ले जाता है। प्राचीन भारत से अब तक, यहाँ के वैज्ञानिकों का अवदान सारे विश्व को ज्ञान की राह दिखाता रहा है।

'जीरो' के अविष्कार से लेकर महत्वपूर्ण गणितीय और ज्योतिषीय स्थापनाओं में भारत ने नई दिशा दी है। हमारे देश में आर्यभट्ट, चरक, बौधायन एवं नागार्जुन जैसे वैज्ञानिक प्राचीन काल में हुए हैं। हमारे वर्तमान भारत में भी देश के वैज्ञानिक पूरी दुनिया के सामने अपनी उपलब्धियों जैसे हाल ही में चंद्रयान-III आदित्य की सफल लैंडिंग से पूरे विश्व में अपना लोहा मनवा रहे हैं।

मैंने कई अच्छे वैज्ञानिकों के सफर को जाना है एवं उन्हें पढ़ा है। उन सब के जीवन एवं उनके विचार अत्यंत सम्मानीय हैं। उनकी यात्रा आसान नहीं थी। कितनी असफलताएँ उनके रास्ते में आयीं परंतु उनका यह सफर हमें बहुत कुछ सिखाता है। किंतु मुझे सबसे ज्यादा डॉ० ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी के बारे में जानने का मौका मिला जिन्हें पूरी दुनिया "मिसाइल मैन" के नाम से जानती है। उनका व्यक्तित्व, उनकी जीवनशैली, उनके विचार मुझे बहुत ही प्रभावित करते हैं।

डॉ० कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को भारत के तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम में हुआ था। इनका पूरा नाम अवुल पकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। इनके पिता जैनुलाब्दीन बहुत ही मध्यम वर्गीय परिवार के थे। डॉ० कलाम ने अपने पिता से ईमानदारी, आत्मानुशासन की विरासत पाई और माता से ईश्वर-विश्वास तथा करुणा का उपहार पाया।

अपने माता-पिता की ही तरह डॉ० कलाम भी सभी धर्मों का आदर एवं सम्मान करते थे। इसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा में भी किया है कि जहाँ वे एक तरफ अपनी नमाज अदा करते तो वहीं दूसरी ओर नित्य दिन रामेश्वरम के प्रसिद्ध शिव मंदिर में जाकर उन्हें कितना सुकून मिलता था। यह हमारे समाज में भाईचारा का प्रतीक है।

अपनी स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने रेलवे स्टेशनों पर अखबार बेचकर अपने परिवार की आर्थिक सहायता की। उन्होंने आर्थिक तंगी में भी अपनी उच्च शिक्षा पूरी की। डॉ० कलाम हमेशा से पायलट बनना चाहते थे पर उस परीक्षा में वे एक स्थान से पीछे रह गए और उनका चयन नहीं हुआ पर उन्होंने हार नहीं मानी।

इसके बाद डॉ० कलाम ने एक वैज्ञानिक के तौर डी.आर.डी.ओ. में कार्य किया जहाँ उन्होंने भारतीय सेना के लिए एक छोटा हेलीकॉप्टर डिज़ाइन किया। उन्होंने 'इन्कोस्पार' (वर्तमान इसरो) कमिटी के एक भाग के रूप में से डॉ० विक्रम साराभाई के अधीन भी कार्य किया। बाद में कलाम साहब भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्त्र SLV III के प्रोजेक्ट निदेशक के रूप में 1969 में इसरो से जुड़ गए।

भारत में बैलिस्टिक मिसाइल के विकास में उनका अहम योगदान है। डॉ० कलाम ने भारत की अनेक महत्वपूर्ण मिसाइलें जैसे पृथ्वी, अग्नि, आकाश आदि को विकसित करने एवं प्रक्षेपण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ० कलाम ने भारत का नाम तकनीकी क्षेत्र में आगे किया एवं अनेक मिसाइलें प्रदान कर इसे सामरिक दृष्टि से इतना सम्पन्न कर दिया कि पूरी दुनिया उन्हें 'मिसाइल मैन' के नाम से जानने लगी।

1998 के सफल पोखरण - द्वितीय परमाणु परीक्षण में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। डॉ० अब्दुल कलाम एक महान वैज्ञानिक होने के साथ-साथ गंभीर चिंतक और अच्छे इंसान भी थे। अभी हाल ही में मुझे रामेश्वरम में स्थित उनका घर जिसकी ऊपरी मंजिल को अब संग्रहालय के रूप में सजाया गया है, को देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

वहाँ उनकी तस्वीरें, मेडल्स, अनगिनत उपलब्धियाँ, बच्चों द्वारा अपने प्रिय राष्ट्रपति को दिए गए लेख, उपहारों, चित्रों आदि को उन्होंने कितने अच्छे से सहेजा है, ये बताती है कि वे लोगों से, बच्चों से कितना जुड़े हुए थे। मशीनों में अपनी दुनिया बसा चुके एक इंसान का मन भी कितना कोमल एवं उदार होता है। रामेश्वरम में बिताए हुए प्रत्येक पल ने मुझे यह एहसास दिलाया कि कैसे एक साधारण-सा बच्चा अपने आत्मविश्वास और माता-पिता के आशीर्वाद को लेकर, अपने गाँव की छवियों को मन में बसाए दूर शहर में रहकर, पढ़कर बाद में पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन गया।

डॉ० कलाम के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा देश के राष्ट्रपति के रूप में भी रहा है। वे कभी भी राजनीतिक पृष्ठभूमि से नहीं रहे फिर भी वह देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। उन्होंने देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में 1992-1997 तक देश की बागडोर को संभाला।

डॉ० कलाम ने आम जनता के बीच में 'द पीपुल्स प्रेसीडेंट' अर्थात् जनता के राष्ट्रपति के रूप में लोगों के हृदय में अपना स्थान बनाया। जब उनका राष्ट्रपति का कार्यकाल समाप्त होता है तो एक रोचक वाक्या हुआ था कि - वे राष्ट्रपति भवन से बाहर आते हुए सिर्फ अपने साथ दो सूटकेस लेकर आते हैं। यह बात उनकी सरलता एवं उदार सोच को दर्शाती है अर्थात् उनका पूरा जीवन ही सादा जीवन, उच्च विचार का बहुत खूबसूरत उदाहरण है।

डॉ० कलाम को विश्वभर में कई विश्वविद्यालयों ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से विभूषित किया। उन्हें वर्ष 1997 में भारत सरकार के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से नवाजा गया है। उन्हें एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया का आर्यभट्ट पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गाँधी पुरस्कार के साथ-साथ कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

डॉ० कलाम ने बहुत सारी किताबें लिखी जैसे विंग्स ऑफ फायर, इग्नाइटेड माईंड्स, भारत-2020, माई जर्नी इत्यादि। अपनी पुस्तक 'भारत 2000- नवनिर्माण की रूपरेखा' में उन्होंने भारत को एक विकसित देश बनाने के अपने सपने को उल्लिखित किया है। बाल शिक्षा में विशेष रुचि रखने वाले कलाम को वीणा बजाने का भी शौक था। डॉ० कलाम के जन्मदिन को 'विद्यार्थी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।



डॉ० कलाम एक महान व्यक्तित्व के साथ-साथ देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत भी थे जिन्होंने 27 जुलाई 2015 को आई.आई.एम. मेघालय के विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण अपनी आखिरी साँस ली और इस दुनिया के लिए एक सुनहरी याद, गौरवपूर्ण विचार, एक आदर्श व्यक्तित्व का छाप छोड़कर हमारे बीच हमेशा के लिए अमर हो गए।

डॉ० कलाम ने अपनी पूरी जिंदगी अपनी मातृभूमि के लिए समर्पित कर दिया। उनका जीवन और काम दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए प्रेरणा साबित हुआ है। डॉ० कलाम का जीवन एक स्वर्णिम इतिहास है जो सभी युवाओं के लिए सदैव एक प्रेरणा की कहानी होगी। डॉ० कलाम ने कहा था –

"अगर सूरज की तरह
चमकना चाहते हो तो
सबसे पहले सूरज की
तरह तपना सीखो"

ये विचार उनके संघर्षशील जीवन को तो दर्शाता ही है। साथ-ही-साथ लाखों-करोड़ों लोगों के नाउम्मीद भरे जीवन में भी उम्मीद की नई रोशनी लेकर आता है।



डॉ० एस. सुधावल्ली
हिन्दी अधिकारी



जो है-ठीक है

एक बार एक अमीर आदमी ने एक शानदार पार्टी का आयोजन किया। कई प्रमुख हस्तियाँ उस पार्टी में शामिल हुईं। पार्टी में आये सारे मेहमान भी उतने ही अमीर थे।

एक रिपोर्टर भी वहाँ था और वह हर जगह फैली विलासिता को देखकर बहुत हैरान था, चाहे वह भोजन हो, सजावट हो, मेहमानों द्वारा पहने गए कपड़े हों या लकड़ीरी उपहार आदि हों। उसने बहुत-सी घटनाओं की रिपोर्टिंग की है, परन्तु आज उसे ऐसा लगा जैसे कि वह किसी मायानगरी में पहुँच गया हो।

उसे सर्वत्र केवल समृद्धि ही समृद्धि दिखाई दे रही थी। वह सोच रहा था कि लोग इतने अमीर कैसे हैं? वे क्या खाते होंगे? कैसे रहते होंगे? और इतना पैसा कमाने के लिए वे क्या करते होंगे? क्या वे उदार हैं? क्या वे कुछ दान-पुण्य भी करते होंगे? क्या उनके बच्चे भी उन्हीं स्कूलों और कॉलेजों में जाते होंगे, जहाँ अन्य लोग जाते हैं? वे एक जैसी ड्रेस कैसे पहनते होंगे?



जब वह इन विचारों में डूबा हुआ था, तभी उसने एक अमीर महिला को काफी महँगी पोशाक और बेशकीमती आभूषण पहने देखा। जब सब लोग अनगिनत स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठा रहे थे, वह सिर्फ गर्म पानी पी रही थी। वह अचंभित था, वह जिज्ञासु हो गया और उस महिला के पास जाकर सहज प्रवृत्ति से बातचीत करने लगा।

जिजासावश, वह उस महिला से काफी सारे सवाल पूछने लगा-

क. बैंक्वेट हॉल विभिन्न प्रकार के शाही दावतों, आयातित आइसक्रीमों, अंतर्राष्ट्रीय मिठाइयों और दुनिया के सभी हिस्सों के उत्तम व्यंजनों से भरा हुआ है, फिर भी मैं आपको देख रहा हूँ, आप सिर्फ गर्म पानी पी रही हैं, क्यों?

ख. ओह, बात यह है, हाँ... मैं डाइट पर हूँ, मैं मॉडलिंग कर रही हूँ इसलिए मैं अपनी काया (शारीरिक फिटनेस) को लेकर सतर्क रहती हूँ।

क. फिर केवल चावल या रोटी और दाल खाएँ।

ख. अरे नहीं..... यह तो कार्बोहाइड्रेट से भरा है।

क. फिर मिठाई खा सकती हैं।

ख. नहीं, मिठाई नहीं खा सकती, वजन बढ़ जाएगा।

क. फिर कुछ पनीर या दूध से बना प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ लें लिया करें।

ख. बिल्कुल नहीं..... मुझे लैक्टोज से एलर्जी है।

क. लैक्टोज के विकल्प मौजूद हैं... जैसे सोया, बादाम आदि।

ख. हम्म.....नहीं, मुझे इसकी गंध और स्वाद से नफरत है।

क. तो ठीक है बताइये, आप हर दिन क्या खाती हो?

ख. केवल पानी, गर्म पानी, गुनगुना पानी, कभी-कभी सप्ताह में एक बार हल्का पुदीना सूप, कभी-कभी कुछ सलाद या अंकुरित हरी चने। बस।

क. शाही दावत और स्वादिष्ट भोजन की सुगंध, क्या आपको इनका स्वाद लेने की इच्छा नहीं होती?

ख. हाँ, क्यों नहीं होती, बिल्कुल होती है। लेकिन मुझे नियंत्रण रखना होता है।

क. आप कितना कमाती हैं, अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो कृपया बताएं?

ख. ओह! वह.... लगभग 20 से 30 लाख प्रति माह।

क. क्या आप विवाहित हैं, यदि हाँ, तो आपके पति क्या करते हैं?

ख. जी, ऐसा है... वो तो बस साधारण व्यापारयूँ ही बस ... हीरे का व्यापार करते हैं।

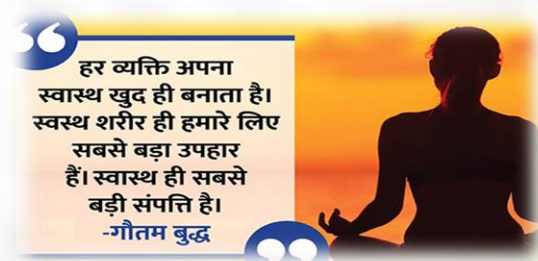
क. और आपका पारिवारिक व्यवसाय जैसे ससुरजी?
ख. ओह, वे तो बस कुछ रियल इस्टेट का व्यवसाय करते हैं।

क. घर का किराया?
ख. किस बात का किराया? अपना पुश्तैनी घर है।

क. अच्छा, एक बात बताइये। इस पार्टी में इतने सारे लोग मौजूद हैं, फिर, आप यहाँ अकेली क्यों खड़ी हैं?
ख. मुझे किसी से मिलना-जुलना पसन्द नहीं है।

(इस बीच किसी ने उन्हें पुकारा और वह महिला चली गई।)
रिपोर्टर दंग रह गया। अगर हम किसी समृद्ध व्यक्ति को देखते हैं, तो तुरंत कहते हैं - 'देखने में खाते-पीते परिवार के लगते हैं,' पर ये लोग तो कुछ भी ढंग का नहीं खाते हैं।

पर फिर....अपने आप को सुधारते हुए सोचने लगा, अच्छा है कि भगवान ने मुझे इनकी तरह अमीर नहीं बनाया, कम कमाता हूँ, परिवार के साथ समय बिताता हूँ, दोस्तों-रिश्तेदारों के साथ मस्ती करता हूँ, न मोटे होने का गम है और न ही पतले होने का शौक... जो पसंद आए खाता हूँ, जहाँ मन करे, चला जाता हूँ.... हे भगवान! तेरा लाख-लाख शुक्र है, हे परम दयालु, इस माया की दुनिया में मुझे नहीं धकेला....धन्य हो प्रभु।



जे. पुष्कला,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



अनिवार्य है ब्रेक फास्ट, जानें क्यों?

हम रात के खाने के कम से कम 10 घंटे बाद सुबह का नाश्ता करते हैं। इसीलिए इसे "ब्रेक फास्ट" कहा जाता है। अब बहुत से लोग "वजन घटाने" के नाम पर सुबह का नाश्ता छोड़ रहे हैं। यह बहुत ही खतरनाक है:-

1) नाश्ते के बिना हमारे शरीर को नुकसान होगा:

हम सुबह जो खाना खाते हैं, वही हमें पूरे दिन के लिए ऊर्जा देता है। नाश्ता वह है जो हमें मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रिय रखता है - अगर हम इसे छोड़ देते हैं, तो हमारे शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाएगी।

2) गुस्सा बहुत आता है:

नाश्ता न करने से आप काफी चिड़चिड़े दिखने लगते हैं। यहाँ तक कि सबसे सामान्य चीजें भी क्रोध का कारण बन सकती हैं।

3) शरीर का वजन बढ़ेगा:

वजन घटाने के लिए नाश्ता परहेज करने वाले और 'मुझे सुबह खाने की आदत नहीं है' बोलनेवाले - एक बात जान लें। अगर आप सुबह खाना नहीं खाते हैं तो आपके शरीर का 'मेटाबॉलिज्म' (उपापचय) ठीक से नहीं हो पाता है। आम तौर पर, जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, हमारे शरीर का उपापचय धीमा हो जाता है। यही कारण है कि जो लोग कॉलेज में पतले थे वे काम पर जाकर मोटे हो सकते हैं। इसलिए जब आपका उपापचय धीमा हो जाता है, तो यदि आप भोजन छोड़ भी देते हैं, तो इसका परिणाम वजन बढ़ना होगा।

4) दिल धड़कना चाहिए न?

कुछ लोग कहते हैं.. मैं ज्यादा कठिन शारीरिक काम नहीं करता, इसलिए मैं नाश्ता नहीं करता।' लेकिन क्या आपके शरीर को देखने, साँस लेने, सुनने, दिल को धड़कने और गुर्दे को काम करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता नहीं है?

यदि आप रात के खाने के बाद अगले दिन एक ही बार दोपहर का भोजन करते हैं, तो आपका शरीर एक या दो दिन प्रतीक्षा करके, अपने नियमित कार्य को जारी रखने के लिए स्वतः ही वसा के पैकेट बना लेगा और यह उन पैकेटों में आपके द्वारा किए गए भोजन से ऊर्जा एकत्रित करेगा। जब भी आप खाना नहीं खाएंगे, आपका शरीर इस ऊर्जा का उपयोग करेगा और इससे आपके शरीर के विभिन्न भागों में वसा जमा हो जाएगी।

5) ग्लूकोज़ की कमी:

जब भी आप खाना नहीं खाएंगे, आपका शरीर ग्लूकोज़ के लिए तरसेगा। उस समय उच्च कैलोरी वाले खाद्य पदार्थ खाने की लालसा होगी। दोपहर के समय आप जरूरत से ज्यादा खाएंगे। साथ ही जो लोग नाश्ता नहीं करते, उनकी जीवनशैली अनुशासित नहीं होती।

6) समाधान क्या है?

आइए, स्वास्थ्यवर्धक मिलेट्स के बारे में जानें जो कई मायनों में फायदेमंद हो सकते हैं, और इसे तैयार करने में भी कम समय लगता है। ज्वार, बाजरा, कोदो आदि मोटे अनाजों को अंग्रेजी में सम्मिलित रूप से 'मिलेट' (millet) कहते हैं। वैसे तो दुनिया में मिलेट की 13 किस्में मौजूद हैं, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए 8 अनाजों-बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदो को शामिल किया गया है, इनसे दलिया, पोंगल उपमा, इडली, डोसा आदि बना सकते हैं। इन्हें 'सुपर फुड' भी कहा जाने लगा है।

ये प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, मैग्नेशियम, जिंक, कैरोटिन, आयरन और विटामिन जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। मिलेट शरीर में स्थित अम्लता यानी एसिड दूर करता है। इसमें विटामिन बी-3 होता है जो शरीर के मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक रखता है, जिससे कैंसर जैसे रोग नहीं होते हैं। मिलेट, टाईप-1 एवं टाईप-2 मधुमेह को रोकने में सक्षम है। बाजरा खाने से श्वास-संबंधी रोग दूर होते हैं। इसके अलावा, और भी कई अनगिनत फायदे हैं। तो, आइए सुबह जल्दी उठें और अपने परिवार के लिए एक स्वस्थ नाश्ता तैयार करें। हम शपथ लेंगे कि हम आगे से कभी भी अपना नाश्ता नहीं छोड़ेंगे।

जैसा अन्न, वैसा मन



आर. गुरुप्रसाद (पुत्र), आर. रविशंकर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



2024 गणतंत्र दिवस समारोह

- 26 जनवरी को हमारे सम्माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में उल्लिखित सभी लोगों को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस समारोह में सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

मैं उन विशेष अतिथियों में से एक था जिन्होंने गणतंत्र दिवस परेड देखने के लिए भाग लिया। यह एक यादगार अनुभव था।

- भारत ने गर्व के साथ अपना 75वाँ गणतंत्र दिवस मनाया, जिसमें महिलाओं की अद्वितीय शक्ति और रक्षा प्रौद्योगिकी में की गई अद्वितीय प्रगति को उजागर किया गया।

परेड में एक ऐतिहासिक क्षण था जब एक ऑल-वुमेन त्रि-सेवा दल ने सेना, नौसेना और वायुसेना से एकजुट मोर्चा पेश किया।

- परेड में न केवल राष्ट्रीय एकता, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय दोस्ती को भी प्रदर्शित किया गया, जिसमें फ्रांसीसी सैन्य दल को भारतीय सैन्य दलों के साथ शामिल किया गया था।

'विकसित भारत' और 'भारत-लोकतंत्र की मातृका' की थीमों के साथ परेड के विषयों में लोकतांत्रिक मूल्यों और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की बात गूँजती रही।



- इस वर्ष की परेड में 25 जीवंत झाँकियों ने 16 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की अनूठी सांस्कृतिक विविधता और नौ मंत्रालयों/विभागों के योगदान को प्रस्तुत किया।

- हमारे सम्मानीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ कर्तव्य पथ पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर समारोह में एक विशेष स्पर्श जोड़ा।

इस अवसर पर राष्ट्रपति के अंगरक्षक की 250वीं वर्षगांठ को भी चिह्नित किया गया, जो गणतंत्र दिवस समारोह के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है।

- गणतंत्र दिवस समारोह के बाद, 27 और 28 जनवरी को हमें नई दिल्ली में स्थित महत्वपूर्ण राष्ट्रीय स्थलों का दौरा भी कराया गया। यह एक यादगार अनुभव था।



हार्दिक
बधाई

राहुल साव
कनिष्ठ अनुवादक



मेरी बेटी

20 सितंबर 2023 को रोज़ की तरह ऑफिस का काम खत्म करके मैं अपने घर पहुँचा ही था कि पिताजी का कॉल आया। उन्होंने बताया कि मैं पिता बन गया हूँ। यह खबर सुनते ही मेरी आँखों से खुशियों की धारा बहने लगी। पहली बार पिता बना था। मेरे पाँव तो जैसे ज़मीन पर टिक ही नहीं पा रहे थे। उन्होंने बताया कि हमारे घर लक्ष्मी आयी है।

अब मेरा मन अपनी गुड़िया की पहली झलक देखने को आतुर हो उठा। अपनी बेटी को वीडियो कॉल पर देखने के बाद ऐसा लग रहा था कि मेरे जीवन में जो एक कमी रह गई थी, वह भी जैसे ईश्वर ने आज पूरी कर दी हो। जब मैंने अपनी बेटी को वीडियो कॉल पर पहली बार देखा, उसके बाद मैं कहाँ शांत बैठने वाला था। सितंबर माह के दौरान काम का दबाव रहने के बावजूद, मैंने तुरंत छुट्टी के लिए आवेदन कर दिया और मेरी छुट्टी मंजूर भी हो गयी। फिर मैंने तुरंत 22 सितंबर 2023 को कोलकाता के लिए टिकट लिया, परंतु अभी भी 2 दिन बचे थे मुझे मेरी बेटी से मिलने में। ये दो दिन मानो 200 वर्ष जैसे बीत रहे थे।

कोलकाता पहुँचते ही मेरे माता-पिता मुझे घर ले जाने आ गए पर मेरा मन अपनी पत्नी एवं बेटी को देखने के लिए तड़प रहा था। रात के करीब 10.30 बज रहे थे एवं अस्पताल में मिलने का समय भी खत्म हो गया था परंतु मेरी जिद के कारण पिताजी ने स्पेशल परमिशन लेकर केवल 10 मिनट का मिलने का समय ले लिया। पहली बार मैंने अपने जिगर के टुकड़े को अपने हाथों में लिया, तब मुझे ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ।

मैंने अपनी पत्नी का हाल-चाल पूछा, वह भी बिल्कुल स्वस्थ थी। लेकिन एक औरत कितनी महान होती है, किस तरह मौत के मुँह में जाकर, असहनीय पीड़ा सहकर एक नई जिंदगी को जन्म देती है, उसकी हालत यह स्पष्ट बयाँ कर रही थी। इसलिए हमारे सनातन धर्म में स्त्री को देवी का दर्जा दिया जाता है। समस्त नारी शक्ति को मेरा शत्-शत् नमन है।

मेरी बेटी में मुझे "मैं" नजर आता हूँ। ज़िंदगी में जब भी मैं तनावग्रस्त होता हूँ, मेरी बेटी का मुस्कुराता चेहरा रामबाण की तरह काम करता है। काम के कारण घर बहुत कम ही जा पाता हूँ परंतु जब-जब घर जाता हूँ, मुझे देखते ही मेरी बेटी के चेहरे पर एक प्यारी-सी मुस्कान छा जाती है और यह मुस्कान मेरी सारी थकान दूर कर देती है।

आधी रात को उठ-उठ कर उसे देखता हूँ कि वह आराम से सोयी है या नहीं। जब भी कभी यह सोचता हूँ कि एक दिन वह बड़ी होकर ससुराल चली जाएगी, इस ख्याल से ही मेरा दिले दहल उठता है।

जब मेरी छुट्टियाँ खत्म होती हैं और मैं ऑफिस जाँइन करने के लिए कोलकाता से चेन्नै आता हूँ और मेरे परिवार वाले मुझे एअरपोर्ट छोड़ने आते हैं तब मेरी बेटी का उदास चेहरा देखता हूँ जो मुझसे वही सवाल करती है जो सवाल मैं अपने बचपन में माँ और पिताजी से पूछता था, जब पिताजी हमें घर पर छोड़कर कमाने जाते थे कि "माँ, पिताजी क्यों हमसे दूर जाते हैं?" आज जब मैं खुद एक पिता बन गया हूँ तो समझ पा रहा हूँ कि कभी-कभी अपनों को सुखद जीवन देने के लिए, खुद को बिछड़न रूपी दुख के कुँए में ढकेलना पड़ता है।





अमेजन की अनोखी दुनिया

अमेजन नदी दुनिया की सबसे बड़ी नदी है और अमेजन जंगल दुनिया का सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय वर्षावन। पूरी दुनिया के 20% ऑक्सीजन का उत्पादन यहीं से होता है, इसीलिए इन्हें 'विश्व का फेंफड़ा' कहा जाता है। यह जंगल 2.1 मिलियन वर्गमील में फैला हुआ है। दक्षिणी अमेरिका से ब्राजील तक फैले इस जंगल के बारे में कहा जाता है कि अगर ये कोई देश होता, तो दुनिया का 9वां सबसे बड़ा देश होता। अमेजन के जंगल 9 देशों से होकर गुजरते हैं। इन जंगलों का करीब 60% ब्राजील, 13% पेरू, 10% कोलंबिया और बाकी का हिस्सा इक्वाडॉर, गुयाना, वेनेजुएला, बोलीविया, सूरीनाम और फ्रेंच गुयाना से होकर गुजरता है। यह जंगल इतना घना है कि इसके कई हिस्सों में रोशनी तक नहीं पहुँचती है। पृथ्वी पर जितने जीव हैं, उसके एक तिहाई को अमेजन के जंगलों में ही देखा जा सकता है।

अमेजन वर्षावन कीड़े-मकोड़ों और छोटे-छोटे जंतुओं का भंडार है। माना जाता है कि यहाँ इतने हजार तरह के कीड़े और जंतु मिलते हैं कि उसके कुछ ही फीसदी के बारे में अभी तक वैज्ञानिकों को पता चल पाया है। यहाँ के वर्षावन अनगिनत रहस्यों से भरे हैं जहाँ अनगिनत दुर्लभ जीव निवास करते हैं। जैसे-

- **ग्रीन एनाकोंडा:** ग्रीन एनाकोंडा ब्राजील के अमेजन और दक्षिण अमेरिका के कुछ अन्य हिस्सों में पाया जाने वाला एक नॉन-वेनोमस साँप है। यह अमेजन की सबसे डरावनी और खतरनाक प्रजातियों में से एक है। ग्रीन एनाकोंडा दलदलों में रहते हैं और लगभग पूरी तरह से पानी में डूबे रहते हैं। ये पानी पीने के लिए आने वाले जानवरों पर हमले की घात लगाए बैठे रहते हैं। ग्रीन एनाकोंडा जहरीले नहीं होते हैं इसलिए ये अपने शिकार को कुंडल के भीतर जकड़ लेते हैं और उसे मौत के घाट उतार देते हैं।





- **जगुआर:** जगुआर एक मांसाहारी और अक्वल दर्जे का शिकारी जानवर है। हालांकि देखने में जगुआर कुछ-कुछ तेंदुए जैसा लगता है लेकिन इसका शरीर तेंदुए से बड़ा और अधिक शक्तिशाली होता है। इसका रहन-सहन और आदतें तेंदुए से ज्यादा बाघ से मिलती-जुलती हैं। इन बड़ी बिल्लियों का वजन लगभग 36 से 158 किलोग्राम के बीच होता है। ये मजबूत जबड़े से लैस होते हैं जो अपने लक्ष्य की खोपड़ी और खाल को आसानी से भेदने में सक्षम होते हैं।

- **टारांटुला मकड़ी:** अमेजन के विशाल जंगल में 3 हजार से ज्यादा मकड़ियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से एक है टारांटुला मकड़ी। यह मकड़ी इतनी खतरनाक होती है कि अगर इंसानी आँखों में पड़ जाए तो उसे पल भर में शीशे की तरह फोड़ सकती है।



- **ईलेक्ट्रिक ईल:** ईलेक्ट्रिक ईल ब्राजील में अमेजन नदी के पानी के नीचे तैरने वाले खतरे का नाम है। यह मछली खतरा महसूस होने पर बिजली का जोरदार झटका देती है। इसका झटका इतना तेज होता है कि यह एक व्यस्क मनुष्य को बेहोश करने के लिए काफी है। हालांकि, मनुष्यों पर घातक हमले दुर्लभ होते हैं लेकिन कुछ मामलों में इंसान बेहोश होकर पानी में डूब भी सकता है।

- पाँयजन डार्ट फ्रॉग:** पाँयजन डार्ट फ्रॉग को 'धरती पर रहने वाला सबसे घातक जीव' भी कहा जाता है। अमेजन में पाये जाने वाले ये चमकीले मेंढक देखने में सुंदर लग सकते हैं लेकिन इनकी कुछ प्रजातियों की त्वचा में खतरनाक जहर होता है जो 10 व्यस्क मनुष्यों को मारने के लिए काफी होता है। इनमें से गोल्डन पाँयजन फ्रॉग सबसे जहरीली प्रजातियों में से एक है। इन मेंढकों में बैट्राकोटाक्सिन नामक जहर पाया जाता है। इसकी बहुत मामूली-सी मात्रा भी लकवा और मौत का कारण बन सकती है।



- बुलेट एंट:** इस खतरनाक चींटी को बुलेट एंट इसके डंक के कारण कहते हैं। इस चींटी के काटने पर असहनीय दर्द पैदा होता है। श्मिट स्टिंग पेन इंडेक्स बुलेट एंट के डंक को '4+' रेटिंग के साथ सबसे दर्दनाक के रूप में रैंक करता है। कहा जाता है कि इनके काटने पर गोली लगने जितना दर्द होता है। एक बार काटे जाने के बाद दर्द पीड़ित को 24 घंटों तक परेशान कर सकता है।

- पिरान्हा मछली:** यह ताज़े पानी की एक खतरनाक और जानलेवा मछली है जो अपने रेजर की तरह तेजधार वाले त्रिकोणीय दाँत के लिए मशहूर है। इनकी लम्बाई साधारणतः 14 से 26 से.मी. तक होती है जबकि पिरान्हा की कुछ प्रजातियाँ 43 से.मी. तक भी लम्बी हो सकती हैं। इनके दाँत बहुत तेज और जबड़े बहुत ताकतवर होते हैं। ये एक आँदमखोर मछली मानी जाती है। ये इतनी हिंसक होती है कि अगर किसी व्यक्ति को काट ले तो उसकी मौत भी हो सकती है। अमेजन नदी में पिरान्हा के इंसानों पर हमले की बात बहुत आम है।





- **ब्लैक कैमन:** अमेजन नदी का सबसे बड़ा शिकारी ब्लैक कैमन है। यह एलिगेटोरिडे परिवार की सबसे बड़ी जीवित प्रजाति है। इनकी लम्बाई लगभग 5-6 मीटर (16-20 फीट) और वजन 450 किलोग्राम तक होता है। ये गहरे हरे-काले रंग के होते हैं जिससे पानी में छिपकर अपने शिकार पर घात लगाने में इन्हें सहायता मिलती है।

- **विशाल नदी ऊदबिलाव (जाइंट रिवर ऑटर):** अमेज़न में पाए जाने वाले विशाल नदी ऊदबिलाव दुनिया के सबसे बड़े ऊदबिलाव हैं। इनमें से कुछ की लंबाई 5.6 फीट (1.7 मीटर) तक होती है। ये ऊदबिलाव अपनी मज़बूत पूँछ और जालीदार पैरों का इस्तेमाल करके अमेज़न की नदियों और झीलों में तैरते हैं। विशाल नदी ऊदबिलाव बहुत मुखर होते हैं। ये कम से कम 22 अलग-अलग ध्वनियाँ निकाल सकते हैं।



- **अरापाइमा मछली:** अरापाइमा या पिरारू संभवतः दुनिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की खतरनाक मछली है, जिसका वजन 440 पाउंड (200 किलोग्राम) और लंबाई 10 फीट (3 मीटर) तक होती है। यह ब्राज़ील, पेरू और गयाना के अमेजन बेसिन में निवास करती है। यह अन्य मछलियों के साथ-साथ पानी की सतह पर पाये जाने वाले जीवों को भी अपना शिकार बनाती है। इसके मुँह के ऊपरी सतह और जीभ पर भी दाँत पाये जाते हैं।

- **हार्पी ईगल:** अमेजन अदभुत पक्षियों और जीवों से भरा हुआ है लेकिन हार्पी ईगल अमेजन वर्षावन का सबसे बड़ा और मजबूत शिकारी पक्षी है। यह दुनिया के सबसे बड़े ईगल्स में से एक हैं। मादाओं का वजन 20 पाउंड तक होता है और नर का वजन 10 पाउंड तक। ये 3.6 फीट लंबे होते हैं और इनके पंखों का फैलाव 7.4 फीट होता है। उनके विशाल पंजे 5 इंच लंबे होते हैं, जो गिजली भालू के पंजों से भी बड़े होते हैं। ये बंदर, आर्मेडिलो, एगोटी, स्लॉथ आदि जानवरों को अपना शिकार बनाते हैं।



- **विशाल मंकी ट्री फ्रॉग:** यह विशालकाय चमकीले हरे रंग का पेड़ों पर पाया जाने वाला मेंढक है जो 6 इंच तक लंबा हो सकता है। ये प्रजाति केवल अमेजन वर्षावन में पाये जाते हैं। ये मांसाहारी होते हैं जो कीड़े-मकोड़े एवं अन्य छोटे जीवों का शिकार करते हैं। ये बंदरों की भाँति पेड़ों पर झूलते रहते हैं जिसके कारण इन्हें 'मंकी फ्रॉग' कहा जाता है।

अमेजन वर्षावन में 400 अरब पेड़ हैं, जिसमें 80,000 से अधिक पौधों की प्रजातियाँ पायी जाती हैं जिनमें 40,000 से अधिक प्रजातियाँ वैश्विक जलवायु को नियंत्रित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसका 70% सिर्फ अमेजन में पाये जाते हैं। इनमें ब्रोमेलियाड, ताड़, एपिफाइट्स, बेलें, फर्न, लिली, ऑर्किड और पेड़ों की कई प्रजातियाँ शामिल हैं। जैसे-

- **विशाल वाटर लिली:** विक्टोरिया अमेज़ोनिका दक्षिण अमेरिका में अमेज़न नदी बेसिन के उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में पाई जाने वाली वाटर लिली की एक प्रजाति है। इसे 'विशाल वाटर लिली' के रूप में भी जाना जाता है। यह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत पौधों में से एक है। यह 10 फीट (3 मीटर) तक के व्यास तक बढ़ सकता है। इसके फूल गुलाबी धारियों के साथ सफेद होते हैं और इनका व्यास 3 फीट (1 मीटर) तक हो सकता है। इसे 'रात की रानी' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यह रात में खिलता है और केवल 48 घंटे तक ही दिखाई देता है।



- **रैफ्लेसिया:** यह फूलदार पौधे अपने बड़े फूलों के लिए जाने जाते हैं। यह व्यास में 3 फीट (1 मीटर) तक बढ़ सकते हैं। इसके फूल आमतौर पर गहरे लाल रंग के होते हैं, जिनमें काले धब्बे होते हैं और इनकी गंध बहुत खराब होती है। ऐसा माना जाता है कि यह सड़े हुए मांस की तरह महकती है इसीलिए इसे 'कॉर्प्स फ्लावर' (लाश का फूल) भी कहा जाता है। पहली बार इस पौधे को खिलने में 7-10 साल लगते हैं और उसके बाद यह हर 4-5 साल में एक बार ही खिलते हैं और वो भी सिर्फ 48 घंटों के लिए।

- **नेपेन्थस:** यह पिचर प्लान्ट की एक प्रजाति है जो दुनिया भर के उष्णकटिबंधीय वातावरण में पाए जाते हैं। पौधे का ऊपरी हिस्सा एक कप जैसा आकार बनाता है जो बंदर की खोपड़ी जैसा दिखता है इसीलिए इसे 'मंकी कप' के नाम से जाना जाता है। मक्खी और मच्छर जैसे छोटे कीड़े के अलावा चूहे और छिपकली जैसे बड़े जानवर भी इन घातक पौधों का शिकार बनते देखे गए हैं।



- **जबुटिकाबा पेड़:** जबुटिकाबा पेड़ ब्राज़ील का एक देशी फलदार पेड़ है जो 30 फीट की लम्बाई तक बढ़ सकता है। यह पेड़ ब्राज़ील के कई हिस्सों में पाया जाता है जिसमें अमेजन वर्षावन भी शामिल है। इसके फल गहरे बैंगनी रंग के होते हैं जो देखने में मोटे छिलके वाले अंगूर के आकार के होते हैं। इसका उपयोग जेली, जैम और वाइन बनाने में किया जाता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन सी और विटामिन ई की उच्च मात्रा पाई जाती है इसीलिए स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अत्यंत लाभकारी होते हैं।



- **रबर का पेड़:** रबर का पेड़ या हेविया ब्रासिलिएन्सिस एक उष्णकटिबंधीय सदाबहार पेड़ है जो अमेजन बेसिन और उसके वर्षावनों में मूल रूप से पाये जाते हैं। यह पेड़ 100 फीट (30 मीटर) की ऊँचाई तक बढ़ सकते हैं। इसकी छाल चिकनी और भूरे रंग की होती है, पत्तियाँ गहरे हरे रंग की और चमकदार होती हैं और फूल छोटे और सफ़ेद होते हैं जो शाखाओं के सिरों पर गुच्छों में उगते हैं। इसके फल छोटे काले कैप्सूल जैसे दिखते हैं जिसमें दो बीज होते हैं। इसका उपयोग टायर, दस्ताने और गेंद जैसे उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है।

- **बाल्सा पेड़:** बाल्सा पेड़ की लकड़ी बहुत हल्की होती है इसीलिए इसका उपयोग पुल बनाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा सर्फ-बोर्ड, नाव, फर्नीचर आदि बनाने में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। हल्के होने के कारण इसे आसानी से किसी भी आकार में काटा जा सकता है। यह पेड़ सिर्फ 10 साल में 50 फीट की ऊँचाई तक बढ़ जाते हैं।



- **पैशन फ्लावर:** पैशन फ्लावर फूलों के पौधों की एक प्रजाति है। इसकी बेल 30 फीट तक लम्बी हो सकती है। यह फूल अपने औषधीय गुणों के लिए विश्वप्रसिद्ध है। इसका उपयोग परम्परागत रूप से अनिद्रा जैसे कई बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि पैशन फ्लावर का अर्क वास्तव में चिंता को कम करने और नींद की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है।

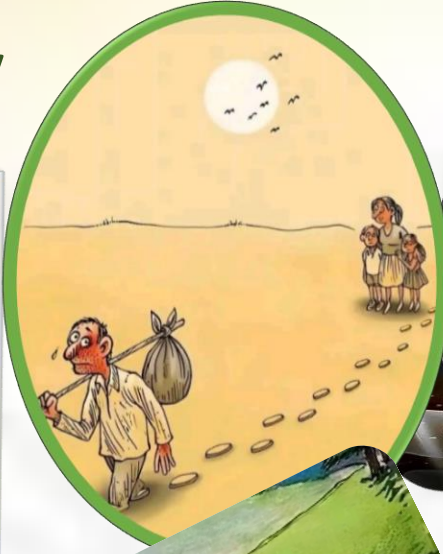
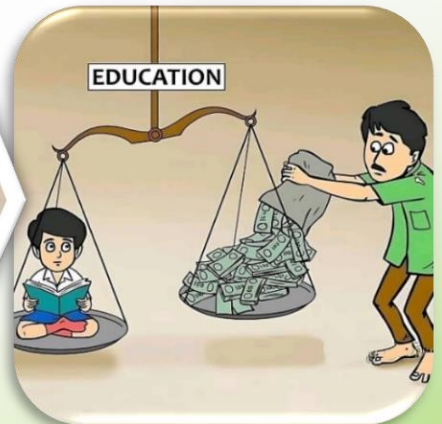


इतना ही नहीं, अमेजन वर्षावन की गहराई में कई स्थानीय जनजातियाँ निवास करती हैं। इनमें से गौरान, हुआओरानी, डाँ, अचुअर, शिपिबो-कोनिबो, मैशो-पिरो, मैत्स आदि जनजातियाँ प्रमुख हैं। यहाँ 400 से ज्यादा आदमखोर जनजातियाँ भी रहती हैं जिनका बाहरी दुनिया से किसी तरह का कोई सम्पर्क नहीं है।



डॉ. एस. सुधावल्ली
हिन्दी अधिकारी

स्वतः स्पष्ट
Self explanatory



राजभाषा गतिविधियाँ

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा निर्देश के अनुपालन में, हमारे कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु लगातार प्रयत्न किया जा रहा है। संपूर्ण वर्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन हुआ। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सभी बैठकों में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया। बैठक के कार्यवृत्त राजभाषा विभाग को एवं अनुपालना रिपोर्ट मुख्यालय को भेजे जा रहे हैं। नियमित रूप से तिमाही प्रगति रिपोर्ट राजभाषा को ऑनलाइन भेजी जा रही है। धारा 3(3) का शत प्रतिशत पालन किया जा रहा है।

हमारे कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजपत्रित अधिकारी एवं अराजपत्रित कर्मचारी कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेकर लाभान्वित हुए। कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सहायक सामग्री एवं कार्यालय निपुणता का वितरण किया गया। प्रत्येक तिमाही को इस कार्यालय के किसी एक अनुभाग/ स्कंध का अभिमुखीकरण किया जाता है ताकि राजभाषा संबंधी कार्यों, तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने से संबंधित जानकारी या अन्य किसी असुविधाओं का निवारण किया जा सके।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के आदेशानुसार हिंदी अनुभाग ने तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी में भाग लिया एवं दिनांक 16.09.2023 से 03.10.2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। दिनांक 03.10.2023 को हिंदी दिवस के समापन समारोह में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश पढ़ा गया, साथ ही विभागाध्यक्ष द्वारा “सुगंध” के 11वें संस्करण का विमोचन किया गया एवं हिंदी दिवस समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों एवं राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलनों/ संगोष्ठी आदि में इस कार्यालय की उपस्थिति हमेशा रही है। दिनांक 19.01.2024 को बेंगलूरु में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हिंदी अनुभाग की डॉ० एस. सुधावल्ली, हिंदी अधिकारी एवं सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक ने भाग लिया। दि.08.11.2023 को नराकास के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी में एस. सुधावल्ली, हिंदी अधिकारी, सुश्री विजयेता साव गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक एवं श्री. राहुल साव, कनिष्ठ अनुवादक ने भाग लिया। श्रीमती अन्नपूर्णा वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक ने नराकास के तत्वावधान में, ए.वी.एन.एल. शिक्षण संस्थान, आवडी में दिनांक- 18.12.2023 से 20.12.2023 तक (सुबह 9.30 - सायं 5.30 बजे तक) आयोजित 3 दिवसीय फोटोशॉप-प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

कल्याण गतिविधियाँ

कर्मचारी कल्याण, कार्यालय में कार्य करने का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी कर्मचारी की बीमारी के समय सहायता प्रदान करने के अलावा, कल्याण प्रकोष्ठ बीमारी से बचाव के लिए स्वास्थ्य शिविरों की योजना बनाने में भी गर्व महसूस करता है।

क्र.सं.	कल्याण गतिविधियाँ	दिनांक	स्थान	टिप्पणी
1	Dr. Agarwal's Eye Hospital द्वारा नेत्र जागरूकता शिविर	13.04.2023	मदुरै/पुदुचेरी	मदुरै में 43 पदधारी एवं पुदुचेरी में 41 पदधारियों ने भाग लिया
		18.04.2023	चेन्नै	चेन्नै में 141 पदधारियों ने भाग लिया
2	जेल बाज़ार	18.04.2023 से 21.04.2023	चेन्नै	राज्य सरकार की पहल को बढ़ावा देने और जेल के कैदियों की सहायता के लिए, जेल में उनके द्वारा बनाए गए उत्पादों को बेचने के लिए जेल बाजार का आयोजन किया गया।
3	Dr. Sankar Narayanan/Billroth Hospitals चेन्नै द्वारा अंग दान दिवस के दौरान PowerPoint Presentation	03.08.2023	चेन्नै	कल्याण अधिकारी द्वारा शपथ दिलाई गई और प्रश्नोत्तर सत्र के माध्यम से लोगों को मृत्यु के बाद अंग दान करने के लिए जागरूक किया गया, जिसमें अंग/शव दान भी शामिल है।

क्रम सं.	कल्याण गतिविधियाँ	दिनांक	स्थान	टिप्पणी
4	Apollo Hospitals Chennai द्वारा प्राथमिक चिकित्सा और बुनियादी जीवन समर्थन प्रशिक्षण कार्यक्रम	10.08.2023	चेन्नै	व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया, एम्बुलेंस में प्राथमिक चिकित्सा किट और उपकरणों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया, प्राथमिक चिकित्सा और बुनियादी जीवन समर्थन के बारे में जागरूकता बढ़ाने में सफलता मिली।
5	कावेरी अस्पताल, चेन्नई द्वारा लेखा, लेखा परीक्षा और आरसीबी एंड केआई के सभी स्टाफ सदस्यों के लाभ के लिए एक निःशुल्क हृदय जांच शिविर का आयोजन किया गया।	18.10.2023 से 20.10.2023	चेन्नै	सभी कार्यालयों से कुल 361 अधिकारी/कर्मचारी शिविर में शामिल हुए और लाभान्वित हुए, 9 अधिकारियों को आगे की जांच और परामर्श के लिए अस्पताल भेजा गया।
6	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	21.11.2023	चेन्नै	ऑडिट दिवस 2023 समारोह के संबंध में इस कार्यालय में चेन्नई निगम स्कूलों के लगभग 60 छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, श्री जे राधाकृष्णन, आईएस, ग्रेटर चेन्नई निगम के आयुक्त मुख्य अतिथि थे और उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

इसके अलावा, पोंगल उत्सव, महिला दिवस समारोह, सतर्कता जागरूकता समारोह, साइकिल रैली, पारिवारिक सैर, महिलाओं के लिए खेल गतिविधियाँ, फायर ड्रिल, लेखापरीक्षा दिवस और कई अन्य समारोह लेखापरीक्षा भवन के परिसर में हमेशा आयोजित होते रहते हैं।

इस कार्यालय के खेल सितीरे



मोहम्मद रेहान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(Badminton)



एस. एस. कण्णन
सहायक पर्यवेक्षक
(Badminton)



डी. सुरेन्द्रनाथ
पर्यवेक्षक
(Table Tennis)





डी. स्वर्णलता
सहायक पर्यवेक्षक
(Carrom)



जॉक्सन दॉस
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(फुटबॉल)



सव्यसाची भगत
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(Carrom)



उपेन्द्र सिंह तँवर
लेखापरीक्षक
(Hockey)



**अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक खेलकूद गतिविधियाँ
वर्ष 2023-24 में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कैरम प्रतियोगिता**

दिनांक 07.11.2023 से 08.11.2023 तक साउथ जोन विजयवाड़ा एवं दिनांक 01.12.2023 से 03.12.2023 तक इंटर जोनल गुवाहाटी में आयोजित कैरम प्रतियोगिता में श्रीमती डी. स्वर्णलता, सहायक पर्यवेक्षक ने जीत हांसिल कर एवं श्री सव्यसाची भगत, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, द्वितीय स्थान प्राप्त कर हमारे कार्यालय का नाम रोशन किया।

51वीं सीनियर नेशनल 2023-24 सीएजी टीम ग्वालियर में आयोजित कैरम प्रतियोगिता में श्रीमती डी. स्वर्णलता, सहायक पर्यवेक्षक ने द्वितीय एवं श्री सव्यसाची भगत, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, तृतीय स्थान प्राप्त कर हमारे कार्यालय को गौरवांविता कराया।

केंद्रीय सिविल सेवा सांस्कृतिक खेल बोर्ड पटना आयोजित कैरम प्रतियोगिता में श्रीमती डी. स्वर्णलता, सहायक पर्यवेक्षक ने रजत पदक विजय होने का गौरव प्राप्त किया।

24 मई 2024 को कैरम एसोसिएशन ऑफ तेलंगाना नवभारती ग्लोबल स्कूल निजामाबाद का स्वर्ण जयंती समारोह में इनका योगदान अतुलनीय रहा है।

वर्ष 2023-24 में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिता

एम.डी.रेहान/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक

1. दिनांक 16.02.2024 से 20.02.2024 तक भारतीय लेखापरीक्षा लेखा विभाग दक्षिण क्षेत्र बैडमिंटन टूर्नामेंट (पुरुष युगल) 2023-24 तिरुवानंतपुरम में आयोजित बैडमिंटन टूर्नामेंट में एम.डी.रेहान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक ने प्रथम स्थान प्राप्त कर हमारे कार्यालय का नाम रोशन किया। साथ ही दिनांक 24 से 27 फरवरी 2024 तक तिरुवनंतपुरम में आयोजित भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग, अखिल भारतीय मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट 2023-24 में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया।
2. दिनांक 21.02.2024 से 23.02.2024 तक भारतीय लेखापरीक्षा लेखा विभाग अंतर क्षेत्रीय बैडमिंटन टूर्नामेंट (पुरुष युगल) 2023-24 आयोजित बैडमिंटन टूर्नामेंट में एम.डी.रहमान ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर हमारे कार्यालय का मान बढ़ाया।
3. 46 वीं मास्टर्स नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप 2023-24 सीएजी टीम पंचकुला में हुए मिश्रित युगल बैडमिंटन प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीत कर हमारे कार्यालय का मान बढ़ाया।
4. इन्फोसिस इंडिया इंटरनेशनल बैडमिंटन टूर्नामेंट 2023 बेंगलुरु में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

आगामी वर्ष जून 2025 में सेवानिवृत्त हो रहे श्री डी. सुरेंद्रनाथ, पर्यवेक्षक का खेल के प्रति प्यार एवं अनुभव

मेरा नाम डी.सुरेंद्रनाथ है, मनिलेप केंद्रीय के अंतर्गत जीएसटी अनुभाग में पर्यवेक्षक हूं। मैंने 1988 में टेबल टेनिस खेल कोटा के रूप में कार्यालय ज्वाइन किया था। मैं अगले साल जून 2025 में सेवानिवृत्त हो रहा हूं। 37 वर्षों की अपनी पूरी सेवा के दौरान, मैंने प्रोफेशनल के रूप में टेबल टेनिस खेलना जारी रखा और राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रदर्शन किया। मैंने सीएजी टीम का प्रतिनिधित्व किया और राष्ट्रीय चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीते। मैंने दक्षिण क्षेत्र और अखिल भारतीय आईए एवं एडी के लिए तमिलनाडु एजी कार्यालय का प्रतिनिधित्व किया और नियमित रूप से खिताब जीते हैं। पिछले साल 2023-24 में सीएजी टीम ने फिर से राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीती और मैं इस टीम का हिस्सा था। मैं अब भी अपने कार्यालय से मिले प्यार और स्नेह के कारण सक्रिय रूप से खेल रहा हूं।

सव्यसाची भगत/वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गत वर्ष 2023-24 में मुझे कार्यालय के तरफ से कैरम प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर मिला। मैंने चयन परीक्षण में द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जिसके परिणामस्वरूप मुझे तमिलनाडु, आई.ए.एवं ए.डी. के "A" टीम में जगह मिली। हमारी टीम ने विजयवाड़ा में आयोजित SZ टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाई। लेकिन हमलोग फाइनल में आन्ध्र के "A" टीम से हार गए। इसके बाद हमारी टीम को गुवाहाटी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में भाग लेने का अवसर मिला। हमारी टीम ने वहाँ भी शानदार प्रदर्शन किया और फाइनल में जगह बनाई। लेकिन वहाँ भी हमलोग फाइनल में आन्ध्र के "A" टीम से हार गए।

कार्यालय के प्रोत्साहन की वजह से मुझे कैरम में आगे बढ़ने का मौका मिला जिसके लिए मैं कार्यालय का आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही आगे भी कार्यालय की तरफ से ऐसे ही प्रोत्साहन की उम्मीद करता हूँ।





नकद पुरस्कार
एवं
प्रमाण पत्र
वितरण समारोह





हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी हमारे राष्ट्र की
अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है
सुमित्रानंदन पंत



अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक सेवानिवृत्त पदधारियों की सूची

क्रम सं.	नाम (श्री/सुश्री/श्रीमती)/NAME (S/Shri/Ms)	पद/ Designation
1	सी. जेय कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
2	एम. नागराजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3	टी.एस. पार्थिवन	सहायक पर्यवेक्षक
4	एम. अशोकन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
5	एस. रघुनाथन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6	एस. अशोकन-III	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
7	एस. पॉलराज	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8	आर. रघुनाथन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
9	के. पद्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
10	जी. राधाश्री	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
11	आर. सरवणन	सहायक पर्यवेक्षक
12	जी. पद्मावति	सहायक पर्यवेक्षक
13	वेदवल्ली कण्णन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
14	ए. कालिमुत्तु	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
15	वी. सुब्रमणियन	पर्यवेक्षक
16	डी. काँचनमाला	सहायक पर्यवेक्षक
17	बी. प्रसाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
18	वी. राजगोपालन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
19	एस. अब्दुर रहमान	पर्यवेक्षक
20	एस. सत्यनारायणन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
21	ए.एम. राजेश्वरी	एमटीएस
22	डी. मदियलगन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
23	के. नीला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
24	सी.एन. बालमुकुन्दन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
25	एम. रवि	पर्यवेक्षक
	अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक पदोन्नत पदधारियों की सूची	
26	अन्जानव कूपर नॉंगख्लाव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
27	आर. स्वामीनाथन	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



धन्यवाद

चेन्नै महानगर के शाम का मनोहर परिदृश्य